

आधार पर किया जाने वाला पक्षपातपूर्ण भेदभाव, भेदभाव या ऊँच-नीच का विचार।

वर्णमातृका स्त्री. (तत्.) सरस्वती देवी, शारदा।

वर्णमाला स्त्री. (तत्.) किसी भी लिपि के वर्णों की क्रमबद्ध सूची, भाषा की लेखन व्यवस्था में प्रयुक्त लिपि-चिह्नों की क्रमबद्ध सूची।

वर्णमैत्री स्त्री. (तत्.) विभिन्न रंगों का आपसी मेल-जोल, चित्र में प्रयुक्त रंगों का पारस्परिक सामंजस्य।

वर्णरेखा स्त्री. (तत्.) चित्र के आधारभूत रंग से भिन्न, उस पर खींची गई धारियाँ।

वर्णलोप पुं. (तत्.) 1. सामाजिक वर्णों में से किसी एक वर्ण का लुप्त हो जाना, ब्राह्मण आदि वर्णों में से किसी वर्ण की अव्याप्ति 2. भाषा प्रयोग में किसी शब्द के वर्ण का लोप, विशेषतया उच्चारण में जैसे- 'बाजार' से 'बजार'।

वर्णवर्ति/वर्णवर्तिका स्त्री. (तत्.) चित्र निर्माण की तूलिका, कूँची, वर्णतूलिका, ब्रश।

वर्णवर्तिका स्त्री. (तत्.) दे. वर्णवर्ति।

वर्ण विकार पुं. (तत्.) 1. वर्ण-परिवर्तन, शब्दों में एक वर्ण का बिगड़कर दूसरा वर्ण हो जाना 2. रंग में आने वाला विकार या दोष 3. भाषाशास्त्र में किसी शब्द में कालांतर में होने वाला कोई ध्वनि-परिवर्तन, किसी वर्ण का लोप/आना आदि वर्णलोप या वर्णागम आदि।

वर्ण विचार पुं. (तत्.) व्याकरण का वह अंग जिसमें वर्णों या अक्षरों के स्वरूप, भेद, उच्चारण, प्रयोग आदि का विवेचन या विचार होता है, प्राचीन वेदांग में इसे 'शिक्षा' कहते थे

वर्णविपर्यय पुं. (तत्.) शब्द में प्रयुक्त वर्णों के स्थान की अदलाबदली होने पर भी शब्द का अर्थ न बदल जाने की स्थिति जैसे- 'कुलुफ' से 'कुफुल'।

वर्णवृत्त पुं. (तत्.) प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या और लघु, गुरु के क्रमों में समानता वाला पद्य, एक प्रकार का समवार्णिक छंद।

वर्णवैषम्य पुं. (तत्.) 1. प्रतिकूल रंगों की सहायता से बनाया गया चित्र, भड़कीले चित्र का विधान।

वर्णव्यवस्था स्त्री. (तत्.) 1. भाषा की वर्णमाला में वर्णों का उपयुक्त क्रम 2. विभिन्न सामाजिक वर्णों की व्यवस्था।

वर्णव्यवस्थिति स्त्री. (तत्.) दे. वर्णव्यवस्था।

वर्णश्रेष्ठ पुं. (तत्.) वर्णव्यवस्था की दृष्टि से सम्मानित वर्ण, ब्राह्मण।

वर्णसंकर पुं. (तत्.) 1. भिन्न वर्णों के स्त्री और पुरुष के संयोग से उत्पन्न संतान 2. अनैतिक यौन संबंध से उत्पन्न संतान, दोगला, हरामी।

वर्णसंगत वि. (तत्.) वर्ण अथवा रंग के अनुकूल, मेल-जोल की दृष्टि से संगत वर्ण।

वर्णसंयोग पुं. (तत्.) संयोग से विभिन्न सामाजिक वर्णों का परस्पर विवाह संबंध।

वर्णसूची स्त्री. (तत्.) छंद शास्त्र में वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता तथा भेद ज्ञात करने की प्रक्रिया।

वर्णहीन वि. (तत्.) वर्ण अथवा जाति से निकाला हुआ, चारों वर्णों में से किसी का नहीं, वर्ण रहित।

वर्णांध वि. (तत्.) कोई विशेष रंग न दिखाई देने के रोग वाला, किसी विशेष रंग के प्रति अंधता व्यक्ति।

वर्णांधता स्त्री. (तत्.) 1. कोई विशेष रंग न दिखाई देने का रोग 2. सभी रंग धूल धूसरित दिखाई देने का रोग।

वर्णाक्षर पुं. (तत्.) शब्द के प्रथम अक्षर अर्थात् वर्ण के आधार पर संपूर्ण शब्द की संकल्पना जैसे- 'दे' से 'देखिए' 'अ.भा.' से अखिल भारतीय, संक्षेपण।